Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 06, June- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

छायावाद की प्रमुख कवयित्री महादेवी वर्मा के काव्य-सौंदर्य पर अध्ययन

स्वाति जैन, शोधार्थी, हिन्दी विभाग, स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)
डॉ. श्रीकांत शरण पाण्डेय, शोध निर्देशक, हिन्दी विभाग, स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

सारांश

हिंदी साहित्य के आधुनिक चरण में द्विवेदी युग के पश्चात हिंदी-काव्य की जो धारा विषय- वस्तु की दृष्टि से स्वच्छंद से स्वच्छंद प्रेम-भावना, प्रकृति-पूजा, प्रकृति में मानवीय क्रिया-कलापों तथा भाव- व्यापारों के आरोप और कला की दृष्टि से लाक्षणिकता प्रधान नव-नवीन अभिव्यंजना-पद्धति को लेकर चली, उसे छायावाद कहा जाता है। अर्थात हिंदी काव्य जगत में द्विवेदी युगीन इतिवृत्तात्मकता की प्रतिक्रिया के फलस्वरुप छायावादी काव्य का जन्म हुआ। छायावाद के नाम से हिंदी काव्य के जिस अंश की पहचान की जाती है, वह 1921 ई. से 1938 ई. तक के दशकों में व्याप्त है। प्रस्तुत शोध में छायावाद के प्रमुख कवयित्री महादेवी वर्मा के काव्यों के काव्य-सौंदर्य पर प्रकाश डाला गया है। रीतिकालीन श्रृंगारिक कविता की धारा में आचार्य द्विवेदी ने अपनी आलोचना को बाँध दिया, फलतः उसकी गति अवरुद्ध हो गई और कविता शुष्क और नीरस इतिवृत्तात्मकता को अपना बैठी। परन्तु रीति की शाश्वत भावना कभी समाप्त नहीं हो सकती। अतएव छायावादी काव्य के रूप में उसका विस्फोट हुआ। छायावाद हिन्दी साहित्य का वह युग है जिसमें प्रेम, प्रकृति और आत्मसात रचनायंक अपने समय का प्रतिनिधित्व कर रहीं थीं।

परिचय

छायावाद नामकरण का श्रेय मुकुटधर पाण्डेय को जाता है। सर्वप्रथम 1920 ई. में जबलपुर से प्रकाशित श्री शारदा पत्रिका में हिंदी में 'छायावाद' नामक चार निबंधों की एक लेखमाला प्रकाशित करवाई थी। मुकुटधर पांडेय जी द्वारा रचित कविता "कुररी के प्रति' छायावाद की प्रथम कविता मानी जाती है। इस दशक में ब्रजभाषा हिंदी काव्य धारा से बाहर हो गई और छायावाद ने हिंदी में खड़ी बोली कविता को पूर्णतः प्रतिष्ठित कर हिंदी को नए शब्द, प्रतीक तथा प्रतिबिंब दिए। इसके प्रभाव से इस दौर की गद्य की भाषा भी समृद्ध हुई। इस काल को 'साहित्यिक खड़ी बोली का स्वर्णयुग' भी कहा जाता है।

छायावादी अभिव्यक्ति की विशेषताएँ है। छायावादी काव्यधारा में प्रचलित प्राचीन रूढ़िवादिता के प्रति विद्रोह की भावना थी, साथ ही यह काव्य अपनी लाक्षणिकता, प्रतीकात्मकता, चित्रोपमता, रमणीय कल्पना, सूक्ष्म सौंदर्यता और रहस्यात्मकता के साथ एक नवयुग का निर्माण कर रहा था। अर्थात प्रकृति प्रेम, नारी प्रेम, मानवीकरण, सांस्कृतिक जागरण, कल्पना की प्रधानता आदि छायावादी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ हैं।

छायावादी काव्यधारा मानववादी काव्यधारा थी। सृष्टि के कण-कण में व्याप्त सौंदर्य, प्रेम और शिवत्व में एक ही विराट तत्व प्रकट हो रहा है और इसी परम व्याप्त सत्य की तलाश छायावादी कवियों द्वारा की गई है। स्वाभावगत विकृति और संकीर्णताओं और व्यक्तिगत क्षुद्रता से मुक्त होकर छायावादी कवि विश्व मानवता की खोज में संलग्न दिखाई देता है।

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 06, June- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

छायावादी कवियों ने उपयोगितावाद का बहिस्कार किया और कल्पना का सहारा लेकर मानव हृदय की सुकुमार भावनाओं को वाणी प्रदान की। छायावादी कविताओं में मानव हृदय के सूक्ष्म- से सूक्ष्म भावों को स्थान मिलाने लगा। छायावाद मुख्यता प्रेरणा का काव्य रहा है और इसलिए वह कल्पना प्रधान भी रहा। महादेवी वर्मा इस काव्य धारा के प्रतिनिधि कवियित्री मानी जाती हैं।

महादेवी वर्मा का जन्म 26 मार्च, 1907 को फ़र्रुखाबाद उत्तर प्रदेश में हुआ। उनके परिवार में लगभग 200 वर्षों या सात पीढ़ियों के बाद पहली बार पुत्री का जन्म हुआ था। अतः बाबा बाबू बाँके बिहारी जी हर्ष से झूम उठे और इन्हें घर की देवी महादेवी मानते हुए पुत्री का नाम 'महादेवी' रखा।

वे सात वर्ष की अवस्था से ही कविता लिखने लगी थीं और 1925 तक जब उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की, वे एक सफल कवयित्री के रूप में प्रसिद्ध हो चुकी थीं। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं मैं आपकी कविताओं का प्रकाशन होने लगा था। सुभद्रा कुमारी चौहान उनकी घनिष्ठ मित्र थी। 1932 में जब उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए. पास किया तब तक उनके दो कविता संग्रह नीहार तथा रश्मि प्रकाशित हो चुके थे।

महादेवी वर्मा हिन्दी साहित्य में छायावादी युग के प्रमुख स्तंभों जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला और सुमित्रानंदन पंत के समकक्ष हैं। प्रतिभावान कवयित्री और गद्य लेखिका महादेवी वर्मा साहित्य और संगीत में निपुण, कुशल चित्रकार और सृजनात्मक अनुवादक भी थीं। आधुनिक हिन्दी की सबसे सशक्त कवयित्रियों में से एक होने के कारण उन्हें 'आधुनिक मीरा' के नाम से भी जाना जाता है। कवि निराला ने उन्हें "हिन्दी के विशाल मन्दिर की सरस्वती' भी कहा।

उन्होंने समाज में व्याप्त हाहाकार, रुदन को देखा, परखा और द्रवित होकर अन्धकार को दूर करने की कोशिश हेतु सामाजसुधार के कार्य, महिलाओं के प्रति चेतना के भाव, मानसिक पीड़ा को इतने स्नेह और शृंगार से सजाया कि दीपशिखा में वह जन-जन की पीड़ा के रूप में स्थापित हुई। 'नीरजा' नामक ग्रन्थ पर इन्हें 'सेक्सरिया पुरस्कार' प्राप्त हुआ। 1944 में उन्हें 'मंगला पारितोषक' दिया गया। भारत सरकार द्वारा उन्हें पद्म भूषण की उपाधी से सम्मानित किया गया।

महादेवी नाम के पर्याय से लोग मूलतः कवयित्री के रूप में जानते हैं। इनकी पद्य रचना हिन्दी जगत को काफी प्रभावित कर चुकी है तथा पद्य में लोग उन्हें वेदना, करूणा, पीड़ा की देवी के रूप में देखते हुए आधुनिक मीरा तक स्वीकारते हैं। परन्तु महादेवी के काव्य सृजन के पीछे सांस्कृतिक आधार थे, मूल्य और मान्यताएँ थीं। इनकी कविता में ओज की जगह आर्द्रता है, विद्रोह की जगह करूणा और शांति की जगह रागात्मक तन्मयता है। महादेवी वर्मा बहुमुखी प्रतिभा की धनी साहित्यकार है। साहित्य की दोनो विधाओं गद्य और पद्य दोनो पर उनका समान अधिकार है। किन्तु पहले वह कवयित्री है और बाद में गद्यकार, छायावाद की यह सच्ची प्रतिनिधि है।

साहित्य के इतिहास में महादेवी वर्मा के सामन मौलिक चिंतनशीलता और विशद कल्पना के उदाहरण कम ही मिलेगें। भावना विचार और चिंतन के क्षेत्र में उनकी जैसी प्रौढ़ और आत्मविश्वासी नारी का मिलना दुर्लभ है। ये आस्था आनन्द और सौन्दर्यमय जीवन की गायिका है।

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 06, June- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

महादेवी जी ने अपनी रचनाओं को जो नाम दिया है, उनमें एक क्रम पाया जाता है। यह प्रभात से प्रारंभ होता है और रात्रि में समाप्त होता है। प्रभात में पहिले नीहार छाता है, इसके बाद रश्मि निकलती है, तदुपरांत 'नीरजा' खिलती है, फिर सांध्यगीत का समय आता है, और तब रात्रि की छाया आ जाने के समय 'दीपशिखा' जलाई जाती है और अंत में यामा आ जाती है। भावना की दृष्टि से भी इन रचनाओं में एक कम है। जिस प्रकार नीहार एक धुँधले विषादपूर्ण वातावरण को उत्पन्न करता है उसी प्रकार नीहार काव्य में एक अज्ञात आराध्य की उपासना चलाती है, हृदय के भाव स्पष्ट रूप से प्रकट नहीं हो पाते और साधना का मार्ग भी निश्चित नहीं हो पाता।

जिस प्रकार रश्मि नीहार को चीर कर प्रकाश व प्रसन्नता लाता है, उसी प्रकार रश्मि की कविताओं में आनंद के दर्शन होते है। नीरजा में हृदय-कमल की भाव- पंखुड़ियाँ खुली हुई दिखाई देती है। सांध्यगीत में उपासिका की उस स्थिति को प्रकट किया है जब वह अपनी साधना में बहुत आगे बढ़ गई है और फल से दूर नहीं। दीपशिखा की अधिकांश रचनाएँ दीप पर है। इनमें दीपक को आत्मा का प्रतीक मान कर उस समय तक जलने के लिए प्रोत्साहित किया गया है जब तक प्रभात न दिखाई दे।

महादेवी की कविताएँ जितनी ही परिमाण में करुण, कोमल, तरल और विविध वर्णच्छता से झलमलाती हुई होती हैं उनके गद्य उसी परिमाण में निर्मन, कठोर, ठोस सघन तथा यथार्थ परक, वास्तविक और सामाजिक होते हैं। उनके रेखाचित्रों में अभाव ग्रस्त, शोषित, पीड़ित प्रताड़ित आदि निम्नवर्गीय ग्राम परिवेश से सम्बद्ध पात्रों के दिन-दशा का मार्मिक चित्रण यथार्थ पूर्ण ढंग से पूर्ण तटस्थता के साथ हुआ है, जो मूलतः स्त्री और दलित हैं।

महादेवी वर्मा का व्यक्तित्व उनके गद्य की तरह ही सहज सरल और लुभावना है। महादेवी का व्यक्तित्व जितना सहज, सरल है उनकी साधना के सतेज सन्दर्भ उतने ही प्रेरणापद संश्लिष्ठ और आग्नेयतापूर्ण है मौन अलसित, प्रलय विस्मित मैं सजाती चल रही नित पावकों का मेला।

महादेवी का कृतित्व

अपने निरीक्षण चिंतन और अनुभव से महादेवी जी ने पाया कि न केवल मानव जीवन ही में वरन समस्त प्रकृति में यही वेदना व्याप्त है और यही उसकी गति का मूलाधार है। वेदना के अंतः स्पंदन के बिना सृष्टि में नियमित क्रिया और सामंजस्य की कोई स्थिति ही सम्भव नही है। जिसका स्पर्श मात्र बड़े से बड़े पर्वत को भी चूर कर देने की क्षमता रखता है। उसी विद्युत वेदना को बादल अपने हृदय में छिपाये रखता है। यदि विद्युतमयी यह वेदना उसके भीतर न होती तो वर्षा से संसार को रससिक्त कर देने की शक्ति का भी उसमें कभी उन्मेष न होता।

महादेवी जी का वेदना किसी अभाव की नही भाव साधना की वह भूमि है जिसमें जीवन की साधना प्रतिष्ठित और प्रतिफलित होती है तथा आत्म साक्षात्कार के साधन सुलभ होते है। कण-कण में स्पंदित इस वेदना को महादेवी जी ने अपनी काव्य चेतना के विस्तार के रूप में ग्रहण किया है। काव्य-सृजन प्रेरणा देने वाली संवेदना का संस्कार उनमें जन्मजात है। जिसके प्रत्यक्ष लक्षण उनके शैशव से ही प्रकट होने लगे थे। यह संस्कार उनकी माँ के साधनापूत प्रभाव से और भी अधिक उद्दीप्त हो उठा। अध्ययन निरीक्षण तथा अनुभव से महादेवी जी के संवेदनशीलता निरन्तर विकसित होती चली गई है।

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 06, June- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

सम्पूर्ण संसृति का क्रन्दन संताप अपने जीवन में भर लेने की हार्दिक चाह ही महादेवी जी की करुणा को मूल स्रोत है और उनके काव्य सृजन प्रेरणा का एक अभिन्न अंग है। ताप दुःख से तप्त विश्व को शीतल एवं सुखी बनाने के लिये बादल की भाँति घिर घिर कर बरस बरसकर और पुनः घिर घिर कर मिटने - बरसने की यह अभिलाषा उनकी वेदना को विश्व वेदना से संयुक्त करके उसे उदात्ततम रूप दे देती है।

"घन वनू वह दो मुझे प्रिय

जलधि-मानस से नव जन्म या

सुभग तेरे ही दृग व्योम में

सजल श्यामल मंथर मूक सा

तरल अश्रु विनिर्मित गात लै

नित घिऊँ झर झर मिट्र प्रिय

घन वनू वर दो मुझे प्रिय

उनकी आकांक्षा प्रार्थना कभी अपनी पीड़ा के परिवार के लिये नही प्रयुक्त हुई है वह तो दूसरों के दुःख एवं विषाद को दूर करने के लिये निरन्तर प्रयत्न शील है।

"मेरे गीले पलक छुओ मत

मुरझाई कलियाँ देखो।

मेरे बन्धन आज नही प्रिय

संसृति की कड़िया देखो।

मुझमें हो तो आज तुम्ही मै,

जन दुःख की घड़ियां देखो

मेरे गीतो पलक छुओ मत

विखरी पंखुरिया देखो।"

विश्व कल्याण की भावना से परिपूर्ण उनकी करुणा करुणरस के स्थायी भाव शोक से सर्वथा भिन्न है। वह न तो हृदय की द्रवणशील सहृदयता मात्र है। करुणा का आधार अपना दुःख नही वरन दूसरों का दुःख है। यही कारण है कि करुणा की सभी स्थितयाँ प्रेरक उल्लासात्मक तथा आनंद विधायक होती है।

वेदना की सखी और करुणा जल से कविता का श्रृंगार करने वाली महादेवी के काव्य की प्रेरणा भूमि करुणा और पीड़ा रही है। वैसे भी काव्य का मूल उत्स वेदना ही है। बाल्मिकी से लेकर आज तक के सभी कवियों ने वेदना से

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 06, June- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

ही कविता के जन्म को सम्भव माना है। यह वेदना कहीं तो वैयक्तिक है और कहीं सामाजिक। वस्तुतः सुख दुःख के धूपछाँही डोरो से निर्मित महादेवी का समग्र जीवन ही वेदना से परिपूर्ण है।

सम्भव है जिस प्रकार प्रभात की सुनहली रशिम को छूकर चिड़िया आनन्द से चह चहा उठती है। मेघ घुमड़ता घिरता देखकर मयूर नाच उठता है। उसी प्रकार मनुष्य ने भी पहले पहले अपने भावों का प्रकाश ध्वनि और गति द्वारा किया ही होगा। अपनी काव्य-सृजन प्रेरणा की ओर संकेत करते हुये महादेवी जी ने यामा की भूमिका में कड़ा है कि बाबा के उर्दू फारसी के अबूझ घटा टोप में पिता के अंग्रेजी - ज्ञान के असूझ कोहरे में मैने केवल माँ की प्रभाती और लोरी को ही समझा ओर उसी में काव्य की प्रेरणा को पाया।

कवि और कलाकार समाज का सजग प्रहरी और परिस्थितियों से प्रेरित व्यक्ति होता है। उसका मानसिक विकास चिंतन प्रक्रिया और विचारणाएँ नित नये परिवेश में आती रहती है। महादेवी जी एक ऐसी कवयित्री है जिनके काव्य की दिशा एक और पथ एक है किन्तु परिस्थितियों के अनुकूल वह प्रशस्त से प्रशस्तर होता चला गया है। इस सन्दर्भ में स्वयं महादेवी जी कहती है कि जिस प्रकार जल का एक रंग भिन्न-भिन्न रंग वाले पात्रों में जैसे अपना रंग बदल लेता है। उसी प्रकार चिरंतन सुख-दुःख हमारे हृदयों की सीमा और रंग के अनुसार बनकर प्रकट होते है।

महादेवी वर्मा के साहित्य के तीन प्रमुख आयाम हैं 1. कविता 2. गद्य, 3. आलोचना कविताओं में पीड़ा की प्रधानता को देखकर आलोचकों ने महादेवी को पीड़ावाद की कवयित्री बना दिया, लेकिन उनका दुःख उन्हें आत्म केन्द्रित नहीं बनाता। उनकी वैयक्तिकता सामाजिकता में बदल जाती है। वह दुःख ही है जो उन्हें पूरे विश्व से जोड़ता है और कवित्व की सार्थकता की तलाश वह इसी दुःख में करती हैं। व्यक्ति की वेदना को समष्टि की वेदना में एकाकार करने को वह कवि का मोक्ष मानती हैं। इसके विपरीत संवेदना और आत्मीयता के धरातल पर खड़े होकर वे गद्य रचना भी करती हैं, उनका गद्य सामाजिक जीवन एवं वाह्य जगत का प्रतिफलन है जो चिन्तन, स्मरण, अनुभूति के पलों को व्यक्त करता है।

महादेवी वर्मा का गद्य किसी भी दृष्टि से काव्य से कम नहीं है। गद्य की अपनी एक स्वतंत्र और मौलिक सत्ता है और वह महादेवी के संवेदनशील कवि हृदय का साथ लेकर और भी मनोहर रूप में प्रस्फुटित हुआ है, उनके गद्य संसार को जानने-समझने की दृष्टि से तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है। पहले भाग में रेखाचित्र अतीत के चलचित्र और स्मृति की रेखाएँ दूसरे भाग में नारी विषयक लेखों के रूप में संकलित श्रृंखला की कड़ियाँ साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबन्ध के रूप में संकलित निबंधों को देखा जा सकता है। तीसरे भाग में संस्मरण पथ के साथी मेरा परिवार आदि को देखा जा सकता है।

गद्य लेखक के रूप में महादेवी का स्नेह ममत्व सामने आया तो सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध आक्रोश भी प्रदर्शित हुआ है। संस्मरणों और रेखाचित्रों को देखें तो आसानी से ज्ञात होता है कि पात्रों की स्थिति, मनोदशा, सामाजिक स्थिति और उनका सम्पूर्ण चित्र प्रस्तुत कर उनके साथ अपनी आत्मीयता, स्नेह का वर्णन किया है। इस स्नेह और ममता के भागी उसके परिवारजन अथवा सहयोगी रचनाकार मात्र ही नहीं रहे हैं। बल्कि समाज के उपेक्षित-शोषित लोगों को अपना स्नेह देने के साथ-साथ निरीह पशु–पक्षियों को भी आत्मीयता प्रदान की है। 'अतीत के

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 06, June- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

चलचित्र और स्मृति की रेखाएँ सामान्यजन के मर्म और भावबोध को छूने की शक्ति रखती हैं। इसका कारण इन दो संग्रहों में महादेवी का स्नेह पाने वाले प्राणी है कोई क्षीण कायावाला है कोई रोगी, कोई विधवा कोई नेत्रहीन है। सभी प्राणी साकार व्यक्तित्व के साथ पाठकों के हृदय को प्रभावित करते हैं; रामा नौकर मातृविहीना बालिका 'बिन्दा', परित्यक्ता सबिया, बाल विधवा माता, पितृहीन घींसा, नेत्रहीन आलोपी, विधुर बदलू, भक्तिन, चीनी फेरीवाला, ठकुरी बाबा, बिनिया धोबिन ,और गुनिया तेलिन आदि करुणा, ममता, सरलता की साकार मूर्ति बनकर सामने आती हैं। महादेवी जी का करुण-सिक्त व्यक्तित्त्व इन निरीह प्राणियों को भी आभासित करता है।

महादेवी जी की कविताएँ जितनी ही परिणाम में करूणा कोमल तरल और विविध वर्णच्छटा से झलमलाती हुई होती हैं उनके आलोचनात्मक निबंध उसी परिणाम में निर्मन, कठोर, ठोस और सघन होते हैं। उनकी इस सघनता में बीच-बीच में व्यंग्य की बिजली अवश्य चमकती हुई पाई जाती है, पर इससे उसके निविड़ रूप में कोई अंतर नहीं आता।

महादेवी प्रत्येक विषय पर अपना निश्चित मत रखती हैं और जो कुछ भी कहती हैं स्पष्ट शब्दों में, सुसंस्कृत भाषा में सुलझे हुए ढंग से कहती हैं, इसका कारण है- वाह्य जीवन के व्यापक निरीश्रण और अंतर्जीवन की गहन अनुभूति तथा चिंतन के फलस्वरूप उन्होंने जीवन और साहित्य के संबंध में ऐसा ज्ञान प्राप्त किया है जिसे वे निश्चित शब्दों में निर्भीकता से व्यक्त करने की कला में बहुत निपुण हैं, जो अपनी एक निश्चित सत्ता रखता है।

आलोचना में वे बहुश्रुत तत्त्वचिंतक गंभीर आलोचक और तर्कशास्त्री की भूमिका में दिखाई देती हैं। गद्य में उनका असली कवि रूप नहीं छिपता । उनकी आलोचना भी शुष्क एवं बौद्धिक न होकर सृजनात्मक होने के कारण आस्वाद्य है। एक समीक्षक के रूप में महादेवी जी ने साहित्य के विभिन्न पहलुओं पर गंभीरता से विचार किया है।

महादेवी वर्मा के समूचे साहित्य - विशेष रूप से उनके पूर्ववर्ती (पद्य) और परवर्ती (गद्य) साहित्य में अंतर्विरोधों की बात की जाती रही है। अधिकांश लोग उनकी कविताओं को रहस्यवादी काव्यधारा के अंतर्गत और गद्य रचनाओं को यथार्थवादी धारा के अंतर्गत रखकर देखते हैं। जबकि ये दोनों तरह की अभिव्यक्तियां एक-दूसरे की विरोधी नहीं, एक दूसरे की पूरक हैं। इनके पद्य और गद्य दोनों से गुजरने के पश्चात् ही महादेवी के कृतित्व का मूल्यांकन और महत्त्व का निरूपण सम्भव है।

काव्य सौन्दर्य

इनके काव्य कृतियों का संक्षिप्त परिचय क्रमानुसार इस प्रकार प्रस्तुत किया जा रहा है।

नीहार'

कवयित्री की प्रथम कृति है 'नीहार' । वस्तुतः महादेवी की चेतना प्रतीकात्मक रूप में विभाजित है। उनकी चेतना भी आध्यंतरिकता ने अन्तर्मुखी अंतप्रवाह को अभिव्यक्ति करने हेतु सर्वत्र सांकेतिक शब्दावली का प्रयोग किया है। नीहार' शब्द एक प्रतीक के रूप में प्रयुक्त है जिसमें भाव की अतल जिज्ञासामय अनुभूति से उत्पन्न भावों की

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 06, June- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

ऊष्मा में वेदना के अणुओं का अन्तर्भाव हो गया है। नीहार' जिज्ञासा की प्रयोगशाला में वेदनानुकूल अनुभूतियों का कुहासा है।

'रश्मि'

कवयित्री की दूसरी काव्यकृति है रश्मि नीहार के समान रशिम भी प्रतीकात्क रूप में प्रयुक्त शब्द है, जिसमें अभिज्ञा के आन्तरिक चिन्तन से उत्पन्न कल्पना के परिधान में दार्शनिक तत्त्वों का आख्यान है। वस्तुतः रश्मि प्रकृति के कक्ष में ससीम - असीम पर लिखी महादेवी की अनुसंधानात्मक चेतना की थीसिस है। इसमें द्वैत के माध्यम से निरूपण और अद्वैत के परिप्रेक्ष्य में समूची द्वैत प्रक्रिया का अन्वेषण है। ससीन - असीन का द्वैत ही वस्तुतः उनका अद्वैत है जिसके माध्यम में सृष्टि - व्यापार की अनवरत प्रक्रिया है।

'नीरजा'

'नीरजा' अनुभूतियों के प्रवेग में प्रवाहित, किन्तु सौंदर्याकर्षण के चुम्बक में आबद्ध, प्रतीक्षा के आकुल क्षणों की संवेदना के धरातल पर प्रणयावेग की इन सायक्लोपीडिया है। नीरजा' का शाब्दिक अर्थ है। वेदना के जल से उत्पन्न अनुभूतियां। यद्यपि महादेवी की साधना की विकास रेखा का क्रम निर्धारण कठिन है वह अखंड एकरस है, फिर भी स्थूल रूप में कहा जा सकता है कि 'नीहार में एक अस्पष्ट जिज्ञासा है तो रश्मि में आकर्षण, परन्तु 'नीरजा' में केवल वियोगजन्य पीड़ा है। दूसरे शब्दों में कवयित्री की अपने वेदनाकुल अस्तित्व की कहानी है। अनुभूतियों का यह मंथन ही इसका वह सामंजस्य स्वर है, जिसमें प्रणय का प्रकाशन है सौंदर्य की लालसा, आंसुओं का अविरल प्रवाह है और हृदय की भावमयी अभिव्यंजना भी।

'सांध्यगीत

'यामा' की अन्तिम कृति है 'सांध्यगीत'। संध्याकालीन गति अर्थात् मिलन की पूर्व प्रतीक्षा के गीत। सांध्यगीत वस्तुतः संध्या के सौंदर्यपरक प्रशान्त, किन्तु रंगीन वातावरण में केन्द्रित मनोदशा का प्रतीक प्रणय के तरल धरातल पर निश्चल भावना से अभिभूत उपासना की गीता है। प्रतीकात्मक रूप से यह संध्या के गीत हैं जिसमें अद्वैत द्वैत का सम्मिलन है और है, जीवन की पावनता की स्पष्टतम् झांकी।

डॉ. राजेन्द्र मिश्र के शब्दों में "नीरजा की ही भांति महादेवी ने सांध्यगीत को भी अपनी उसी मानसिक स्थिति का उदघोष माना है जिसमें उन्होंने सुख-दुःख में सामंजस्य स्थापित कर लिया था।" [6] वस्तुतः नीरजा एवं 'सांध्यगीत' एक ही मनः स्थिति की दो अभिव्यक्तियाँ हैं जिसमें प्रथम का प्रण्य–विरह, द्वितीय में उपासना है। मनोविज्ञान की शब्दावली में यह रागवृत्ति का उन्नयन है और दर्शन की शब्दावली में कल्पना परिज्ञान, साध्य की भांति वह अपनी साधना को व्यापक देखती है, साधना की इस व्यापकता परिधि में सृष्टि का हर कण और समय का हर क्षण अभिसार स्थल है और मिलता है। बेला। आगे के गीतों में न इन्हीं मानसिक स्थितियों के बिम्ब हैं प्रकृति के पदार्थों से तादात्म्य, उनका मानवीकरण और यही सर्वचेतनवादी धरातल, ही सांध्यगीत के प्रारंभ से है। जिसमें महादेवी का जीवन सांध्यगीत के रूप में तद्रूप प्रतिभासित है।

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 06, June- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

'दीपशिखा'

'दीप - शिखा' में दीप आत्मा एवं शिखा साधना की निरन्तर गतिशील निष्ठा की प्रतीक है, अतः दीपशिखा का प्रतीकात्मक अर्थ है आत्मा की साधना। वस्तुतः दीपशिखा महादेवी की मेटाफिजिक्स है, जिसमें दुःख मानवीय संवेदना से अभिभूत, अव्यक्तिगत, निस्संग हो अपना दंशन खोकर सुख को समर्पण कर बैठा है। इस कृति की अनुभूति में रज के प्रति नमत्व और विश्वासमय अबंध गति के नवीन तत्वों का अन्तर्भाव है जिसमें पीड़ा की ज्वाला- दीपशिखा में परिवर्तित हो विश्व के कण-कण में प्रकाश वितरित कर घुल जाने में ही वरदान मानती है। डॉ. राजेन्द्र मिश्र महादेवी के कथन को अपनी पुस्तक महादेवी का रचना संसार में इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं- "दीपशिखा में अविश्वास का कोई कंपन नहीं है। नवीन प्रभात के वैतालिकों के स्वर के साथ इसका स्थान रहे ऐसी कामना नहीं है, पर रात की सधनता को इसकी लौ झेल सके, यह इच्छा तो स्वाभाविक ही रहेगी।" [7]

अतएव स्पष्ट है कि 'दीपशिखा' में विश्वास का अकम्प स्वर है और किसी अभिनव संदेश के संकेत की अपेक्षा साधना की दृढ़ता का ही प्रतिपादन कवयित्री 'दीपशिखा' को किसी विशेष मार्गदर्शन की उपलब्धि की कामना की अपेक्षा वेदना से आप्लावित मानवीय संवेदना के धरातल पर साधना के उत्सर्ग में निराशा के अंधकार को सहन कर सकने उसमें आशा का प्रकाश, विश्व में घुल जाने का समर्पण भाव प्रभृति की स्वाभिव्यक्ति की संज्ञा प्रदान करती हैं।

'सप्तपर्णा'

महादेवी के अनुसार भाषा में विचारों और मनोभावों का एक ऐसा आवरण होता है कि एक भाषा के भावों को दूसरी भाषा की वेशभूषा देना कठिन रहता है। यही कारण है कि सृष्टा की अनुभूतियों को अनुवाद के माध्यम से उसी रूप में अंकित करना सरल नहीं रहता। सप्तपर्णा की उनकी रचनाएँ संस्कृत महान् ग्रंथों का अनुवाद हैं। अनुवाद के लिए मूल कवि की कृति के साथ तादात्म्य स्थापित करना होता है। महादेवी ने अनुवाद के साथ मूल देने की औपचारिकता का निर्वाह इसलिए नहीं किया क्योंकि जो लोग मूल से परिचित हैं वे इसका रसास्वादन कर ही सकते हैं और जो परिचित नहीं है उनके लिए भी इसकी अनिवार्यता नहीं लगती। सप्तपर्णा के अनुवाद में सबसे पहली ऋग्वेद से कुछ चुने हुए अनुवाद दिए गए हैं। इनमें आर्षवाणी शीर्षक से उषा, ज्योतिष्मती, जागरण, बोध, अग्नि गान और प्रश्न शीर्षक से अनुवाद है। उषा के संबंध में उसे नई आभा से उद्भासित कहा गया है।

'प्रथम आयाम

प्रथम आयाम की कविताओं में तुकबंदी ही अधिक है क्योंकि वे महादेवी के बचपन की कविताएँ हैं। महादेवी ने इन कविताओं के साथ-साथ अपने बचपन की विकास यात्रा का भी चित्रण किया है जिसके संदर्भ में उन्होंने इन कविताओं की रचना की। कहीं वे कहती हैं आओ प्यारे तारे आओ और कहीं बयां हमारी चिड़िया रानी लिखती हैं उनकी कविताओं के शीर्षक तितली से कोयल, जैसे हैं फिर एक कविता है बारहमासा जिसमें उन्होंने बारह महीनों का चित्रण किया है।

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 06, June- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

इस कविता की पृष्ठभूमि में उनकी माँ की इच्छा रही है। महादेवी कहती हैं- 'माँ चाहती थी कि हम मासों, पर्वों आदि के संबंध में जाने इसलिए उन्होंने मुझसे एक बारहमासा लिखने के लिए कहा। मैंने अपनी बाल बुद्धि के अनुसार लिखा भी, किंतु तुकबंदी के अतिरिक्त कुछ नहीं था। परन्तु उन्होंने इसकी सराहना भी की और संभाल के रखा भी। [8]

'अग्निरेखा'

'अग्निरेखा की कविताएँ ज्वाला को ही पर्व मानती हैं। यह युग चुनौतियों का है। कोई भी किरण अंधकार से उतरने का सहारा नहीं मांगती जिसने ताप को ही नहीं झेला वह किस चुनौती का सामना कर सकता है। अब समय सुबह की बात करने का नहीं आंधी की राह पर चलने का है। अब किसी भी वंशी में पाँच स्वरों का गीत नहीं मिलता। महादेवी स्पष्ट कहती हैं कि- 'अंधकार को आंखों में अंजन की तरह नहीं लगाना है।'

गद्य कृतियाँ

इनके गद्य कृतियों का संक्षिप्त परिचय क्रमानुसार प्रस्तुत किया जा रहा है-

रेखाचित्र

'अतीत के चलचित्र'

'अतीत के चलचित्र महादेवी जी के रेखाचित्रों का प्रथम संग्रह है। 'अतीत के चलचित्र' नाम से ही स्पष्ट है कि महादेवी ने अपने रेखाचित्रों में उन सभी व्यक्तियों का चित्रण किया है। जिनके संपर्क में रहीं हैं। सभी पात्र उन वर्गों से आए हैं जो समाज के अभाव से भरा किन्तु संवेदनशील वर्ग रहा है। इस रेखाचित्र संग्रह में 'रामा', 'भाभी', 'बिन्दा सोबिया', 'बिट्टो, बालिका माँ, 'घीसी', 'अभागी स्त्री 'अलोपी', 'बदलू' और 'लछमा' कुल ग्यारह रेखाचित्र संग्रहीत हैं। ये सभी पात्र भारत के निम्नवर्गीय ग्राम्य परिवेश से संबद्ध चरित्र हैं। महादेवी जी ने विविध प्रकार की कठिनाइयों को झेलते चरित्रों के साथ-साथ विविध प्रकार के सामाजिक सरोकारों का भी उदघाटन किया है।

स्मृति की रेखाएँ

स्मृति की रेखाएँ महादेवी का दूसरा रेखाचित्र संग्रह है। इसमें कुल सात रेखाचित्र संगृहीत हैं: भक्तिन चीनी फेरीवाला', 'जंग बहादुर 'मुन्नू, 'ठकुरी बाबा बिबिया' और 'गुंगिया' हैं। ये रेखाचित्र भी अतीत के चलचित्र ' में संग्रहीत रेखाचित्रों की भांति भारत के निम्न और ग्राम्य परिवेश से संबद्ध चरित्र हैं। दोनों रेखाचित्रों में संवेदनाएं एक समान हैं इन रेखाचित्रों में महादेवी वर्मा विविध प्रकार के सामाजिक यथार्थ बोध के स्तरों से गुजरती हैं और भारतीय सामाजिक व्यवस्था के उन शून्य संवेदन मानवीय पक्षों का दस्तावेज प्रस्तुत करती हैं।

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 06, June- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

निबंध

"श्रृंखला की कड़ियाँ

श्रृंखला की कड़ियाँ महादेवी का प्रथम निबंध संग्रह है यह निबंध संग्रह मूलतः 'नारी और समाज से जुड़े समस्याओं पर केन्द्रित है। इस पुस्तक का समर्पण की इसकी पूरी अंतर्वस्तु को व्यंजित कर देता है "महादेवी के शब्दों में "जन्म से अभिशप्त जीवन से संतप्त किंतु अक्षय वात्सल्य वरदानमयी भारतीय नारी को।" [9]

वस्तुतः श्रृंखला की कड़ियाँ में भारतीय नारी के अभिशापों की करूण चीत्कार है। नारी मुक्ति के उपायों की और गहन चिंतन और विद्रोही तेवर है। अन्याय के प्रति असहिष्णु महादेवी का स्वर यहाँ आहत और उग्र है। नारी यातना के इतिहास को समझने और निवारण की ओर प्रस्थान करने तथा नारी विमर्श के संदर्भ में इसकी विशेष महत्त्व है।

आलोचना टैकनीक से उद्भूत निबंधो का संग्रह "महादेवी का विवेचनात्मक गद्य" पुस्तक में साहित्य और संस्कृति का नया परिप्रेक्ष्य सामने आता है। यह परिप्रेक्ष्य पूरा होता है "साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध पुस्तक से।

महादेवी की कसकती-करकती चिंता के मूल में संस्कृति-भाषा और शिक्षा रही है। "भारतीय संस्कृति के स्वर स्पष्ट करने के लिये उन्होंने

"मातृभूमि देवोभव, संस्कृति का प्रश्न",

"भारतीय संस्कृति की पृष्ठभूमि" "भाषा का प्रश्न"

"शिक्षा का उद्देश्य, " "भारतीय संस्कृति और नारी" तथा "संस्कार और संस्कृति जैसे चिंतनपरक निबंध लिखे हैं। इस तरह के निबंधों की एक धारा का ही विस्तार "क्षणदा संकल्पिता" और "चिंतन के क्षण" जैसे निबंध संग्रहों में हुआ है।

संस्मरण

'पथ के साथी'

'पथ के साथी महादेवी जी का चौथा गद्य कृति है जो मूलतः संक्रमणात्मक रेखाचित्र है इसमें कुल सात जीवनीपरक संस्मरण हैं- कवीन्द्र रवीन्द्र (प्रणाय) 'मैथलीशरण गुप्त जयशंकर प्रसाद सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', 'सुभद्राकुमारी चौहान सुमित्रानंद पंत और सियारामशरण गुप्त। इन सभी लेखकों के साथ महादेवी गहरी अनुभूति से जुड़ी रही हैं। इन सभी कवियों के जीवन वृत्त उनके जीवन परिवेश और क्रिया कलाप पर सम्यक् दृष्टिपात करते हुए उनकी उपलब्धि का सर्वांगीण मूल्यांकन किया गया है। महादेवी जी ने यहाँ अपने अग्रजों एवं सहयोगियों (सहकर्मियों) अथवा सजातीय कवियों के संबंध में नितांत तटस्थ दृष्टि से विचार विमर्श किया है।

'स्मारिका'

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 06, June- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

स्मारिका में महादेवी ने महान् राजनेताओं का स्मरण किया है इसमें गाँधी, जवाहर, राजेंद्र प्रसाद और पुरुषोत्तम दास टंडन शामिल हैं।

'मेरा परिवार'

मेरा परिवार में महादेवी ने पशु-पक्षियों के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त की है। किस प्रकार मनुष्य इसका शोषण करते हैं और इन पर अनाचार होता है। महादेवी ने इन सबका गहरी संवेदना से चित्रण किया है। पशु पक्षी प्रकृति की विभिन्न रुपच्छवियों को इस कृति में जिस प्रकार संजोया गया है, उससे एक ओर रेखांकन कला का प्रमाण मिलता है और दूसरी ओर महादेवी जी की भावज्ञता, संवेदना तथा भाषाहीन जीवों की तरल - सरल दृष्टि से संप्रेषण स्थापित कर लेने की क्षमता का भी।

इसमें लेखिका ने अपने जन्म के 5 वर्ष बाद से लेकर अगले 6 दशकों के बीच अपने लगभग दो दर्जन घरेलू पालित पशु-पक्षियों का अजायबघर बसाया है। इनमें मुख्य है 9 प्राणी जो 7 अध्यायों में वर्णित है

1. 'नीलकंठ' (मोर)
2. 'गिल्लू'
3. 'सोना' (हिरनी)
4. 'तुर्मुख (खरगोश)
5. गौरा (गाय)
6. नीलू (कुत्ता)
7. निक्की' (नेवला) रोजी (कुत्ता) और 'रानी' (ताज रानी घोड़ी)।

महादेवी का रचना संसार अत्यंत व्यापक है। वे अपने विचारों में साहित्य के साथ ही समाज और उसके परिवेश को अंकित करती हैं। उनके गद्य सृजन में उनके आस-पास का परिवेश और उनकी गहरी संवेदना के चित्र मिलते हैं। महादेवी ने मूल रूप से कविताओं का ही सृजन किया है। यामा' में संकलित 'नीहार, रश्मि', 'नीरजा' व सांध्यगीत उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

महादेवी का सर्ववाद अनुभूतिविहीन न तो है और न हो सकता वर्डसवर्थ ने आत्मा और उसकी गति को अंकित करते हुए कहा कि विचारों में आई हुई वस्तुएँ उनकी भीतर से गुजरती हैं। यही बात रोमानी कवियों पर सच प्रमाणित हुई हैं। अगणित कंपन का एक तार है जो महादेवी के अनुसार सबको एकसूत्र में ही नहीं बाँधता बल्कि उसमें जीवन का मर्म भी छिपा है। महादेवी की वेदना उनकी कविता नहीं है यह है कि उनकी कविता में उनकी वेदना है और यह वेदना संपूर्ण मानव सृजन की वेदना बनकर ही आती है। महादेवी की अनेक आलोचनाएं हुई हैं। पर उन सब पर बहस करना हमारा अभिप्रेत नहीं है। महादेवी को किसी आक्रमण से बचाव की जरूरत नहीं है क्योंकि सबसे बड़ा बचाव उनका गद्य संसार ही है।

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 06, June- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

इधर कुछ दिनों से ज्यादातर हिन्दी भाषी समाज महादेवी के गद्य की सर्जनात्मकता पर मुग्ध हो रहे हैं, महादेवी के गद्य का निर्भय स्वर उनके पद्य की लज्जा भरी छवि को तोड़ता है। महादेवी के खुलेपन का प्रमाण गद्य देता है, पद्य नहीं। इनके पद्य सृजन का एक निश्चित समय सीना है परन्तु गद्य सृजन में वे जीवन भर सक्रिय रहती हैं। महादेवी का काव्य संसार इनके संस्कार से प्रभावित है परन्तु गद्य इनके स्वभाव एवं चिंतन का प्रतिफलनन है। इनका गद्य शुष्क विचारों से नहीं उष्ण विचारों की लौ से धधकता है जो समाज के अंधेरे बंद कमरों में नारी व्यथा को उजागर करता संसार है। महादेवी का यह गद्य नारी नवजागरण के इतिहास से भरा गद्य है।

हिन्दी आलोचकों ने काव्य केंद्रित दृष्टि से छायावाद के कवियों के काव्य पर तो मनोयोगपूर्वक विचार किया, लेकिन गद्य पर निगाहें बहुत कम गई। परिणाम यह हुआ कि पंत, प्रसाद, निराला और महादेवी के गद्य के साथ न्याय नहीं हुआ। इस दौर में लिखा गया महादेवी का विचारों की आग से दहकते गद्य का उपेक्षित रहना स्वभाविक है परन्तु इससे हिन्दी आलोचना के मर्दवाद का एकांगी परिचय मिलता है। महादेवी के गद्य के सामाजिक संदर्भ मूल्यवान है।

एक मनस्विनी - नारी का तेजस्वी चिंतक रूप नारी की यातना को 'अंतर्वस्तु' बनाता है और उसके अनेक अनहुए अनजाने पहलुओं को विचार के केंद्र में लाता है। पुरुषवर्चस्व समाज के अन्याय का भंडाफोड़ करने वाला गद्य आज के स्त्री-विमर्श के लिए बड़ा खजाना है। रेखाचित्रों का पूरा विभावना व्यापार पराहित विपन्न, टूटे-कुचले - अपमानित - उपेक्षित स्त्रियों, बच्चे-बूढ़ों को सामने लाता है और पहलुओं पर गंभीर प्रश्न उठाता है। गंभीरता से विमर्श' करने के लिए हमें भारतीय समाज व्यवस्था के 'मनुवादी' प्रश्न ही नहीं उठाता, उन प्रश्नों पर ललकारता है। निम्नवर्गीय समाज के वाली पात्रों की यातना पीड़ा के दिल हिला देने वाले करुण भूमिका में नारी का चुड़ैलवाद भी अनेक रूपों में में उजागर हुआ है।

महादेवी वर्मा का रेखाचित्र संग्रह अतीत के चलचित्र एवं स्मृति की रेखाएँ का समस्त पात्र व्यक्ति के नहीं समूह के प्रतीक हैं, वे सभी पात्र ग्राम परिवेश से सम्बद्ध है जो मूलतः स्त्री और दलित है। इसमें बच्चे, स्त्री और बूढ़ों का चित्रांकन मुख्य रूप से हुआ है, ऐ सभी निर्धन, अपंग, अभाव ग्रस्त, अपमानित प्रताड़ित एवं अपने अधिकारों से वंचित हैं। बच्चे मुख्य रूप से विमाता के दुर्व्यवहार, अत्याचार, अपमान यातनाएँ और प्रताड़ना के शिकार है। तो दूसरी ओर स्त्री अपने पतियों द्वारा भारतीय समाज के कुव्यवस्था के शिकार हैं। एक ओर जहाँ पुरुष निकम्मा, शराबी, जुआ खोर, तीतर बाज है वहीं दूसरी ओर महादेवी की स्त्री पात्र संस्कारी कामवासना से नियंत्रित कर्मठ, साहसी, सहृदयी तथा अपनी इच्छाओं की बली चढ़ाती हुई दिखती हैं। फिर भी भारतीय पुरुष प्रधान समाज स्त्री को उपहार में अपमान, उपेक्षा, प्रताड़ना, यातनाएँ कष्ट लात-घूसा देता हुआ दिखता है तथा इसे इसके समवेधन के शब्द कुकर्मी, कूलटी, अभागी आदि शब्दों से सम्मानित किया जाता हैं, जो करुण, मार्मिक और हृदय स्पर्शी तो हैं ही साथ-साथ भारतीय समाज व्यवस्था के दोहरे पन के जर्ज स्थिति को भी दर्शाता है।

इनके रेखाचित्र में कुछ बूढ़े भारतीय पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था के संवाहक तथा कुछ संस्कारी और जन कल्यानकारी है। इनके रेखाचित्रों में जिन विकलांगों का चित्रण हुआ है वे सभी सहृदयी, कर्मठ, साहसी और परिष्कृत हृदय वाले हैं। जो मुख्यतः साहस और कर्म के लिए जाने गये हैं। भाग्य एवं समाज के व्यवस्था ने जो उनके साथ छल,

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 06, June- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

प्रपंच, विश्वासघात और दुर्व्यवहार किया है। उसके उपरान्त भी वे लोगों के साथ सहृदयता से पेश आते हैं तथा उनका ममत्व सराहनीय हैं।

महादेवी ने अपने रेखाचित्र में जिस समाज व्यवस्था के विकृत रूप का चित्राकंन किया है वह सच में मार्मिक मर्मभेदी, करूणामय और हृदयव्यथातुर है। जो भारतीय समाज व्यवस्था के जर्जर स्थिति के ऊपर करारा चोट है।

महादेवी का रचना संसार वह संसार है जिसमें उन्होंने उस मनुष्य को रचा है जो व्यथा के बीच अपने संघर्ष में जीने को विवश हों। उनका अध्यात्म मानवता के व्यापक धरातल पर रचा गया है। उनका गद्य उन व्यक्तियों के बीच जी रहा है जो समाज में अभाव का जीवन जी रहे हैं उनकी कविता उस आत्मा का मिलन है जो अपनी व्यथा के बीच अपनी अनुभूतियों को जीती है। महादेवी छायावादी हैं या रहस्यवादी यह बहस करने के बजाय इतना ही कहना पर्याप्त है कि इन सभी वादों के बीच वह मानव अनुभूतियों की कवि हैं। उनकी कविता कालयात्रा करते हुए कालजयी कविता है। उनका रचना संसार सीमित फलक पर भी व्यापक दृष्टि का रचना संसार है। महादेवी की सृजन यात्रा ने उनकी यात्रा का ही सृजन नहीं किया बल्कि उनके सृजन को भी महायात्रा का अनंत का रूप दिया है। आधुनिक हिन्दी साहित्य में वे अकेली कवयित्री हैं। जिनके शब्दों के निशान इतिहास के पार हमेशा के लिये अंकित हो गए हैं।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः महादेवी के कृतित्व पर जो स्पष्ट विचार उभरते हैं वह यह है कि महादेवी का व्यतित्व मील का पत्थर है, अपनी इच्छा के अनुरूप जो उन्हें अपने व्यक्तिगत जीवन के लिए अनुकूल लगा वह जिद और हठ से अपनायी । जिद और हठ पूर्वक अपनाए गए मार्ग इतने स्पष्ट स्वच्छ और ठोस थे कि उन्हें अपने जीवन में लिए गए निर्णयों पर कभी पश्चाताप नहीं हुआ अन्याय, अत्याचार, अंधविश्वास, रूढ़ियों और परम्पराओं के सामने वे कभी झुकी नहीं बल्कि उसका प्रतिकार किया है। उन्होंने दूसरों की व्यथा को अनुभव ही नहीं किया बल्कि उस व्यथा को आत्मसात् किया है। उसी संवेदना के विकसित रूप उनके कृतियों में दिखाई देता है। उनके सम्पूर्ण साहित्य की उपज वास्तविक यथार्थ (दुःख, अन्याय और सामाजिक अव्यवस्था) की अनुभूती से असंतुष्ट, आत्म रूदन और क्रंदन के अभिव्यक्ति का प्रतिफलन ही है जो उस व्यथा को मार्मिक शब्द रूपी चित्रों में व्यक्त करती हैं।

उनके पद्य में लोगों को जो अस्पष्ट दिखाई देती है उसे स्पष्ट करने में उनके गद्य विशेष कर रेखाचित्र महत्वपूर्ण दृष्टि देते है। जिस प्रकार अंधकार की जड़ता को प्रकाश की सूक्ष्म दृष्टि से दूर किया जा सकता है उसी प्रकार महादेवी के पथ के अस्पष्ट रूप को गद्य के स्पष्ट (यथार्थ, वास्तविक, सामाजिक) अनुभूति की दृष्टि बोध से समझा जा सकता है।

उनके साहित्य व्यक्तित्व पर कुछ ठोस चिंतन व्यक्त करने में इनके गद्य चश्मे की भूमिका निभाते हैं। महादेवी वर्मा अपने रेखाचित्र में जिन पात्रों का चित्राकंन करती हैं वे सभी मुख्य रूप से स्त्री, दलित और बूढ़े हैं। जो मूलतः ग्राम परिवेश से सम्बद्ध हैं। वे सारे पात्र शोषित, दलित, पीड़ित, उपेक्षित, असहाय निर्धन, अपंग होने के साथ ही साथ उदार, कर्तव्यशील, साहसी, व्यवहारिक सहर्दय तथा वफादार हैं और अपने कर्म के प्रति निष्ठावान हैं।

महादेवी अपने रेखाचित्रों में इन पात्रों का चित्रण करते हुए विभिन्न प्रकार के सामाजिक प्रश्नों को उद्घाटित करती है। जिससे भारतीय समाज व्यवस्था का विकृत रूप प्रकट होता है। जो यथार्थ रूप में हृदयस्पर्शी, मार्मिक, करुणामय, मर्मभेदी और हृदयव्याथातुर है जो भारतीय समाज व्यवस्था के जर्जर स्थिति के ऊपर करारा चोट है। अंततः महादेवी का साहित्य समाज में समाज से और समाज के लिये ही है।

संदर्भ सूची

1. प्रियदर्शनी, सुषमा, हमारा साहित्यिक परिवार और महादेवी वर्मा, दिवाकर भट्ट (सं.), आधारशिला, महादेवी विशेषांक, नैनीताल, 2008, अंक 54-55, पृ. सं. 41
2. गुप्त, गणपतिचन्द्र, महादेवी : नया मूल्यांकन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण 1997, पृ. सं. 23
3. गुप्त, गणपतिचन्द्र, महादेवी : नया मूल्यांकन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण 1997, पृ. सं. 23
4. गुप्त, गणपतिचन्द्र, महादेवी : नया मूल्यांकन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण 1997, पृ. सं. 24
5. गुप्त, गणपतिचन्द्र, महादेवी : नया मूल्यांकन, लोकभारती प्रकशन, इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण: 1997, पृ. सं. 26
6. मिश्र, राजेन्द्र, महादेवी का रचना संसार, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण: 2007, पृ. सं. 201
7. मिश्र, राजेन्द्र, महादेवी का रचना संसार, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण: 2007, पृ. सं. 202
8. मिश्र, राजेन्द्र, महादेवी का रचना संसार, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण: 2007, पृ. सं. 221
9. वर्मा महादेवी, श्रृंखला की कड़ियाँ, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2010, पृ. सं. 5